



भगवान श्री आद्य शंकराचार्यकृत

॥ साधनापंचकम् ॥

1. वेदो नित्यमधीयताम् तदुदितं कर्मस्वनुष्ठीयताम्,
तेनेशस्य विधीयतामपचितिः काम्ये मतिस्त्यज्यताम् ।
पापौघः परिधूयतां भवसुखे दोषोऽनुसन्धीयताम्
आत्मेच्छा व्यवसीयतां निजगृहात्पूर्वं विनिर्गम्यताम् ॥

1. वेदों का नित्य अध्ययन करें ।
2. उसमें प्रतिपादित कर्म का अनुष्ठान करें ।
3. उन कर्मों के द्वारा ईश्वर की पूजा करें ।
4. सकाम कर्मों का त्याग करें ।
5. पापों के पुंज को इस प्रकार धो डालें ।
6. संसार के सुखों में दोषों का अनुसंधान करें ।
7. आत्मा को जानने की हृदय इच्छा करें ।
8. घर के प्रति आसक्ति त्याग कर ज्ञान हेतु निकलें ।

2. संगः सत्सु विधीयतां भगवतो भक्तिर्दृढधीयतां
शान्त्यादिः परिधीयतां दृढतरं कर्माशु सन्त्यज्यताम् ।
सद्विद्वानुपसर्प्यतां प्रतिदिनं तत्पादुका सेव्यताम्
ब्रह्मैकाक्षरमर्थ्यतां श्रुतिशिरो वाक्यं समाकर्ण्यताम् ॥

1. सत्पुरुषों का संग प्राप्त करें ।
2. भगवान के प्रति दृढ भक्ति उत्पन्न हो ।
3. शमादि गुणों को उत्पन्न करें ।
4. शीघ्र ही कर्म का त्याग करें ।
5. सद्गुरु की शरण में जाए ।
6. प्रतिदिन उनकी सेवा करें ।
7. एकमात्र ब्रह्म के ज्ञान के लिए प्रार्थना करें ।
8. वेदान्त का श्रवण करें ।

3. वाक्यार्थश्च विचार्यतां श्रुतिशिरःपक्षः समाश्रीयतां
दुस्त्कर्कत्सुविरम्यतां श्रुतिमतः तर्कोऽनुसन्धीयताम् ।
ब्रह्मैवास्मि विभाव्यतां अहरहः गर्वः परित्यज्यतां
देहेऽहंमतिरुज्झ्यतां बुधजनैः वादः परित्यज्यताम् ॥

1. महावाक्य के उपर विचार करें ।
2. वेदान्त के पक्ष का ही आश्रय लें ।
3. दुस्त्कर्क का आश्रय न लें ।

4. श्रुति के अनुकूल चिन्तन करें ।
5. हम ही ब्रह्म हैं, यह भावना प्रतिदिन दृढ करें ।
6. अभिमान का त्याग करें ।
7. देहात्म बुद्धि का त्याग करें ।
8. विद्वानों के साथ वाद विवाद न करें ।

4. क्षुद्र्याधिश्च चिकित्स्यतां प्रतिदिनं भिक्षौषधं भुज्यतां
स्वाद्भन्नं न तु याच्यतां विधिवशात्प्राप्तेन संतुष्यताम् ।
शीतोष्णादि विषह्यतां नतु वृथा वाक्यं समुच्चार्यतां
औदासीन्यमभीप्स्यतां जनकृपा नैष्ठुर्यमुत्सृज्यताम् ॥

1. भूख-प्यास को व्याधि रूप जानकर निदान करें ।
2. उसके लिए भिक्षा रूपी औषधी का पान करें ।
3. स्वादिष्ट भोजन की कामना न करें ।
4. प्रारब्धवशात् प्राप्त में ही संतुष्ट रहे ।
5. सर्दी-गरमी आदि द्वन्द्वों के प्रति सहिष्णुता रखें ।
6. उनके प्रति शिकायत न करें ।
7. सब से असंग रहें ।
8. लोगों के एहसान को निष्ठुरता पूर्वक त्याग करें ।

5. एकान्ते सुखमास्यतां परतरे चेतः समाधीयतां
पूर्णात्मा सुसमीक्ष्यतां जगदिदं तद्बाधितं दृश्यताम् ।
प्राक्कर्म प्रविलाप्यतां चित्बलान्नाप्युत्तरैः श्लिष्यतां
प्रारब्धं त्विह भुज्यतामथ परब्रह्मात्मना स्थीयताम् ॥

1. एकान्त में सुखपूर्वक वास करें ।
2. परब्रह्म में अपना चित्त समाहित करें ।
3. 'हम ही पूर्ण हैं' इस अर्थ को अच्छी तरह देखें ।
4. समस्त दृश्य जगत् को बाधित करें ।
5. संचित कर्मों का ज्ञान की दृष्टि से विलय करें ।
6. आगामी कर्मों से लिप्त न हो ।
7. प्रारब्ध कर्म का भोग करें ।
8. परब्रह्म में अपने चित्त को समाहित करें ।